पाठ 16

हमारी भी सुनो

(प्रस्तुत एकांकी में पर्यावरण प्रदूषण न करने एवं पानी, बिजली के दुरुपयोग को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। पर्यावरण के संरक्षण, पानी एवं बिजली का सदुपयोग आदि नैतिक मूल्यों के विकास का प्रयास किया गया है।)

(पात्र–महाराजा, मंत्री, हवा, पानी, बिजली, कई लोग)

पहला दृश्य

(महाराजा का दरबार। महाराजा सिंहासन पर विराजमान हैं। महाराजा के सभी राज्य के मंत्री व दरबारी गण बैठे हैं। महाराजा के समक्ष खुले स्थान पर प्रजा जन खड़े हैं।)

महाराजा – मंत्री जी, क्या सभी शिकायतकर्ता उपस्थित हो गए हैं?

मंत्री – (खड़े होकर) हाँ, महाराज! यदि आपकी आज्ञा हो तो न्याय कार्यवाही प्रारंभ की जाए।

महाराजा – मंत्री जी, दरबार में आज जनसाधारण की संख्या अधिक नजर आ रही है। क्या हमारे राज्य में आपराधिक गतिविधियाँ बढ़ गई हैं?

मंत्री – नहीं, महाराज। राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति सही है। आपके राज में शेर–बकरी एक ही घाट पर पानी पीने की स्थिति में हैं।

महाराजा – फिर तो आज कोई रोचक वाद प्रस्तुत होने जा रहा होगा। उसे देखने–सुनने के लिए जनता यहाँ आई है।

मंत्री – हाँ, महाराज। आज तीन के विरुद्ध मुकदमा है। ये तीनों सीधे प्राणिमात्र के संपूर्ण जीवन से जुड़े हैं।

महाराजा – ओह! फिर तो न्याय करते समय मुझे कठिनाई का सामना करना होगा। खैर, आप उन तीनों के विरुद्ध बारी–बारी से वाद प्रस्तुत करें। पर तीन हैं कौन?

मंत्री – महाराज, उनके नाम जानने की उत्सुकता औरों को भी है। ये हैं–जल, वायु और बिजली।

महाराजा – मंत्री, अब तक तो जल, वायु और अग्नि हमारे लिए पूजनीय रहे हैं। आज हम इनके विरुद्ध शिकायत सुनेंगे। यदि शिकायत सही हुई तो इन्हें दंडित भी करना होगा।

मंत्री – हाँ, महाराज। न्याय के सामने सभी समान होते हैं। दोषी को दंडित होना ही होगा, चाहे उसकी प्रतिष्ठा, उसका पद कुछ भी हो।

महाराजा – हाँ, मंत्रीजी। हम इसी भावना से न्याय करेंगे। आप सबसे पहले जल के विरुद्ध मुकदमा प्रस्तुत करें।

(भीगे हुए कपड़ों में लड़का आता है, जो पानी बना हुआ है।)

पानी – महाराज की जय हो। महाराज, मैं नहीं जानता कि लोग मुझसे क्यों कुपित हैं। मैं एकदम निर्मल हूँ, महाराज।

मंत्री – महाराज, लोगों की यही शिकायत है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा। नदियों और नहरों में पहले की तरह केवल मछलियों और जल जंतुओं के साथ नहीं बहता है। अपने साथ गंदगी बहाकर दूर–दूर तक फैलाता है। महाराज, लोगों का कहना है कि अब पानी का पानी उतर गया है।

पानी – नहीं, महाराज। यह दोष मेरा नहीं है। मैं जिन लोगों के काम आता हूँ, अब वे मेरी रक्षा नहीं करते वरन् उपेक्षा करते हैं।

महाराजा – तुम क्या कहना चाहते हो? तुम्हें सात तालों में बंद करके रखा जाए? नित्य प्रति तुम्हारी पूजा की जाए?

पानी – नहीं, महाराज, पुरानी कहावत है, 'बहता पानी और रमता जोगी ही अच्छा होता है। मैं यह भी नहीं चाहता कि जल पूजन के नाम पर लोग अवांछित वस्तुएँ नहर, नदी, कुएँ में फेंके।

महाराजा – तुम अपनी बात बाद में कहना। पहले मुझे लोगों की शिकायत सुनने दो।

लोग – हाँ, महाराज पहले हमारी बात सुनो।

पानी – महाराज, मुझे मालूम है। इन लोगों की यही शिकायत है कि पानी अब खराब हो गया है। इसे ये लोग जल प्रदूषण कहते हैं। पर महाराज, उसका एकमात्र कारण भी तो ये लोग ही हैं।

महाराजा – उल्टी शिकायत कर रहे हो?

पानी – हाँ, महाराज। गाँव में पहले जोहड़ के आस–पास की भूमि स्वच्छ रखी जाती थी। कोई वहाँ जूते पहनकर भी नहीं जाता था। अब वहाँ कूड़े के ढेर हैं। वर्षा के समय यह कूड़ा जोहड़ के पानी में मिल जाता है। पीने के पानी के तालाब में पशुओं को नहलाते हैं। इस कारण से मैं दूषित हो जाता हूँ। मुझे पीकर ये लोग बीमार हो जाते हैं। इसमें मेरा क्या दोष है महाराज?

महाराजा – पानी सिर्फ जोहड़ में ही तो नहीं होता?

पानी – हाँ, महाराज। मैं (पानी) जब नदी में होता हूँ तो मुझ पर रासायनिक आक्रमण होते हैं। कारखानों की गंदगी मुझ में डाल दी जाती है। महाराज, यही कहा जा सकता है कि लोग अपने हाथों अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

(लोग आपस में फुसफुसाते हैं। फिर एक बोलता है।)

एक – महाराज, यह तो मान लेते हैं कि इसमें हमारा कसूर है, पर कहीं बरसना, कहीं नहीं बरसना–यह तो इसकी मनमानी है।

पानी – नहीं महाराज, मुझ पानी की मर्जी कहाँ चलती है। मैं तो परिस्थितियों का दास हूँ, जहाँ का माहौल वर्षा के अनुकूल होता है, वहाँ मुझे बरसना ही पड़ता है। इन लोगों ने पहाड़ियों को काटकर मैदान बना दिए हैं। वृक्ष काटकर वन नष्ट कर दिए हैं। वहाँ वर्षा कैसे हो सकती है? वर्षा न होने के लिए ये लोग ही ज़िम्मेदार हैं।

दूसरा – जल अनुशासनहीन हो गया है, बाढ़ लाता है।

पानी – जो बादल बना है, वह तो बरसेगा ही। जहाँ वर्षा का पानी बहना चाहिए, जहाँ नदी बहनी चाहिए, जहाँ मेरे सुस्ताने की पुरानी जगह होगी, वहाँ तो मैं जाऊँगा ही। इन लोगों ने ऐसे स्थानों पर अपने ग्राम–नगर बसा लिए हैं। ऐसे घर तो डूबेंगे ही। मैं इनकी बनाई गलियों–नालियों में घूमता रहूँ। यह कैसे संभव है? ये लोग स्वयं अनुशासन में नहीं रहते और मुझसे इसकी आशा करते हैं। खुद श्रीमान बैंगन खाए, ओरों को परहेज बताएँ।

तीसरा – महाराज, पानी कुछ ज़्यादा ही अनियंत्रित हो रहा है। इसकी जबान पर भी लगाम नहीं है। हमारा गाँव सदियों से ऊँची जगह पर बसा है। फिर भी इस बार हमारा गाँव बाढ़ में बह गया। महाराज, पानी आँख मूँद कर चलता है।

पानी – नहीं महाराज, मैं ही हूँ, जो देखकर चलता हूँ। इसीलिए सदा ढलान की ओर जाता हूँ। कभी अपने आप ऊँची जगह नहीं चढ़ता हूँ। महाराज इनके गाँव के पास एक पहाड़ है। पहले उस पर बहुत से वृक्ष होते थे। जब मैं पहाड़ पर बरस कर नीचे उतरता था, तब वृक्ष कुंजों से होकर नीचे आता था। पहाड़ से धीरे–धीरे नीचे उतरकर सीधे नाले में चला जाता था। अब लोगों ने उन वृक्षों को साफ कर दिया है। नाले के रास्ते में घर–कारखाने बना लिए हैं। अब मैं पहाड़ से उतरता नहीं हूँ, लुढ़कता हूँ। मुझे स्वयं यह ज्ञान नहीं होता कि नीचे कहाँ गिरूँगा?

महाराजा – कोई और शिकायत। (कोई नहीं बोलता)

आपकी चुप्पी इस तथ्य का प्रमाण है कि जल प्रदूषण एवं जल से होने वाली क्षति के लिए जल नहीं अपितु आम जन दोषी हैं। आपका भला इसी में है कि अपनी गलतियों को सुधारो

तथा पानी को निर्मल एवं उपयोगी रहने दो। इसकी बचत करो।

दूसरा दृश्य

(वैसा ही दरबार। इस बार पानी की जगह वायु उपस्थित है। वायु एक लड़की बनी है। उसने सफेद वस्त्र पहने हैं, जो परदे के पीछे चल रहे पंखे की वजह से उड़ रहे हैं।)

महाराजा – मंत्री, उन लोगों को बुलाएँ, जिन्हें वायु से शिकायत है।

एक आदमी– महाराज की जय हो। महाराज, वायु पहले की तरह सुगंध नहीं बिखरेती है। दुर्गंध फैलाती है।

वायु – महाराज, यह आरोप झूठा है। अपने आप में मेरे पास न तो रंग है न खुशबू न बदबू। यहाँ के लोग अपने मरे हुए पशु–पक्षी यहाँ–वहाँ डालते हैं। इस कारण मैं दूषित हो जाती हूँ। इनके कारखानों से निकली गैस और गंदगी मुझ में घुल–मिल जाती है। मैं जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती हूँ। मुझे आज भी वह काला दिन याद है जब भोपाल के एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझ पर सवार होकर दूर–दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग मौत के मुँह में चले गए थे।

महाराज, इन लोगों से कहिए कि ये गंदगी के ढेर लगाकर मुझे दूषित न करें। मुझ में जहरीली गैस मिलाकर मुझे प्राणदायी से प्राणहारी न बनाएँ।

आदमी – लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्टी डाल देती हो। क्या इसका भी हम तुम्हें न्यौता देते हैं?

वायु – चलना तो मेरा काम है। आप कहते हैं तो लो, मैंने चलना बंद कर दिया।

(वायु बंद हो जाती है। सभी बेचैनी अनुभव करते हैं)

महाराजा – वायु से संबंधित कोई अन्य परिवाद?

आदमी – महाराज, वायु आँधी बनकर आती है और हमारे साफ–सुथरे घर कूड़े से भरकर गंदा कर देती है। इसे कहो, वायु बनकर बहे, आँधी बनकर अंधेरा न लाए।

वायु – महाराज, आँधी से इसका मतलब मेरे तेज चलने से है। वैसे तो मैं अपनी गति से हर स्थान पर बहती हूँ। पर जहाँ वायु कम होती है, वहाँ वायु की पूर्ति करने के लिए तेजी से जाती हूँ। जब मैं तेज चलती हूँ तो इन लोगों का जमा किया हुआ कूड़ा–कचरा मेरे साथ उड़ने लगता है।

महाराज, मैं कूड़ा–कचरा तलाश नहीं करती हूँ। ये लोग ही उसे मेरे रास्ते में डाल देते हैं। मेरे राह में पुष्प होंगे तो मेरे साथ सुगंध उड़ेगी, गंदगी होगी तो बदबू। ये लोग अपने घर–दुकान की सफाई कर कूड़ा सड़क पर डाल देते हैं। पॉलिथीन गलियों–बाज़ारों में डाल देते हैं। मेरे साथ उड़कर कूड़ा वापस इनके घरों में चला जाता है। पॉलिथीन उड़कर खेतों में चला जाता है और इनकी ही फसलों को नुकसान पहुँचाता है।

महाराजा – आप लोगों को कुछ कहना है?

(कोई नहीं बोलता है।)

महाराजा – अभी तो सब कह रहे थे–हमारी सुनो, हमारी सुनो। अब जल एवं वायु की सुनकर सबकी बोलती बंद हो गई। खैर, आपने अपनी शिकायत के प्रत्युत्तर में वायु का दुखड़ा सुन लिया है। वायु को प्रदूषण से बचाना आपके ही हाथ में है। जल और वायु को मित्र बनाएँ और अपना भला करें।

तीसरा दृश्य

महाराजा – मंत्री जी, अब किसकी बारी है?

मंत्री – महाराज, बिजली की।

(अचानक अंधेरा हो जाता है।)

महाराजा – ओह, इस बिजली से तो मुझे भी खूब शिकायतें हैं। आज इसे दंडित करूँगा ही।

(अचानक प्रकाश हो जाता है)

बिजली – महाराज की जय हो, महाराज मुझे दंडित करने से पहले मेरी भी सुनो।

महाराजा – तुम्हारी सुनूँगा। न्याय का तकाजा यही है। जल एवं वायु ने तो 'हमारी भी सुनो' की रट नहीं लगाई थी। क्या तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ ज़्यादा है?

बिजली – महाराज, लोगों की जो मेरे प्रति शिकायतें हैं वह मैं ही बता देती हूँ क्योंकि मुझे जाने की जल्दी है।

महाराजा – तुम्हारी आम शिकायत तो यही है कि तुम बार–बार जाती हो तुम घर, खेत, कारखानों में टिकती क्यों नहीं?

बिजली – महाराज, आदमी भी वहीं जाते हैं जहाँ मिठाइयों–पकवानों को खाने का मौका मिले। जहाँ आमोद–प्रमोद हो, मनोरंजन हो, रंग–बिरंगे कपड़े पहनने को मिले।

महाराजा – ऐसी कौनसी जगह है?

बिजली – समारोह, उत्सव, विवाह के कार्यक्रम। आज आपके नगर में कई स्थानों पर विवाहोत्सवों का ऐसा आयोजन हो रहा है जहाँ हज़ारों रंग–बिरंगे बल्ब लगे हुए हैं। दीवाली नहीं है, पर आज दीपमाला के नजारे सारे नगर में नजर आएँगे। मेरे बिना यह कैसे संभव है?

महाराजा – लेकिन कुछ लोगों की शान–प्रदर्शन के लिए नगर–गाँव के सारे लोग तुम्हारा अभाव क्यों

भुगते?

बिजली – महाराज, अपनी मरजी से मैं कहीं नहीं आती–जाती। मेरा स्विच मेरे हाथ में नहीं है। अपने भंडार को भरना, उसमें वृद्धि करना भी मेरे हाथ में नहीं है। यदि एक जगह बिजली का ज़्यादा उपयोग होगा तो दूसरी जगह कमी होगी ही। इस कमी को ही बिजली का जाना कहते हैं।

महाराजा – तुम्हारी शक्ति भी अनियंत्रित रहती है। कभी तेज होकर फ्यूज उड़ा देती हो तो कभी तुम्हारा वोल्टेज इतना कम हो जाता है कि न मोटर चलती है न पंखा, न कूलर।

बिजली – महाराज, इसमें भी मेरा कुसूर नहीं है। मेरा उपयोग सही ढंग से नहीं होता है। आपके महल में सैकड़ों कक्ष हैं। कई कक्ष ऐसे हैं, जिनका हर समय उपयोग नहीं होता है, फिर भी उनमें बल्ब जलते रहते हैं, पंखे चलते रहते हैं। यहाँ जो लोग शिकायत करने आए हैं, उनके घरों में भी बिना जरूरत बिजली के उपकरण चलते रहते हैं। महाराज, आप नगर की सड़कों, गलियों में जाकर देखें। कहीं–कहीं आपको दिन में स्ट्रीट लाइट जलती हुई नजर आएगी। बिजली की कमी या वोल्टेज की कमी का कारण यही है।

महाराजा – इतनी शिकायतें हैं तुम्हारे पास?

बिजली – महाराज, मेरा दुरुपयोग, अनावश्यक उपयोग ही मेरे अभाव का सबसे बड़ा कारण है। मेरा उपयोग मैं स्वयं कभी नहीं करती।

आदमी – महाराज, सुनें? यह बिजली हत्यारिणी भी है। हम रोज देखते हैं कि कितने ही पक्षी इसके तारों से चिपक कर मर जाते हैं। पशु और मनुष्य बिजली के खंभों से करंट खाकर मर जाते हैं।

बिजली – माचिस से चूल्हें में आग जलाई जाए या दीपक जलाया जाए तो वह उपयोगी है। यदि उससे कोई अपना हाथ जलाएगा तो उसका दोष दियासलाई को जाएगा या जलाने वाले को? इन लोगों ने वृक्षों को काटकर पक्षियों के घर उजाड़ दिए हैं। उनके बैठने के स्थान छीन लिए हैं। उड़ते–उड़ते थककर विश्राम के लिए बिजली के तारों पर बैठ जाते हैं। कभी–कभी मौत के शिकार हो जाते हैं। इंसान स्वयं असावधानी बरतता है और अपने पशुओं को भी नियंत्रण में नहीं रखता, तभी दुर्घटना होती है। इसमें मेरा क्या कुसूर?

आदमी – महाराज, आँधी–वर्षा के आते ही बिजली लुप्त हो जाती है। उस वक्त तो इसकी आवश्यकता होती है। यह बिना चेतावनी के चली जाती है।

बिजली – महाराज, यह भी इस आदमी की कर्तव्यहीनता का प्रमाण है। इसका फ़र्ज़ बनता है कि मेरे

चलने के मार्ग का सही और नियमित रखरखाव करें। मेरा अवैध उपयोग होता है, मेरी चोरी होती है। वर्षा–आँधी से बचाव के लिए मेरे तार, खंभे ढंग से रखे जाएँ। महाराज, मैं लोगों के साथ ही रहना चाहती हूँ।

महाराजा – बिजली, तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है कि आज का मुकदमा तुम्हारे विरुद्ध नहीं है बल्कि तुम्हारा वाद इन लोगों के खिलाफ है।

बिजली – नहीं महाराज, मैं किसी को दंडित नहीं करवाना चाहती। मैं चाहती हूँ कि लोग महल से झोंपड़ी तक अपनी आदत बदलें। मेरी फिजूलखर्ची बंद हो, चोरी बंद हो। वितरण सही हो, फिर देखना किसी को मेरा वियोग नहीं सहना पड़ेगा।

महाराजा – मंत्री जी, जल, वायु और बिजली के आज के मुकदमों से यही सिद्ध होता है कि हम में से कोई निर्दोष नहीं है। अपनी आदतें बदलकर और अपने–अपने कर्तव्य पहचान कर, उसे पूरा कर हम सभी को न्याय करना है।

शब्दार्थ

समक्ष	–	सामने	वाद	–	मुकदमा
कुपित	–	क्रोधित	अवांछित	–	अनचाहा
जोहड़	–	कच्चा तालाब	संवाहक	–	ले जाने वाला
प्राणहारी	–	प्राणों का हरण करने वाला			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पाठ के अनुसार किस–किस के विरुद्ध शिकायत की गई है?
2. बिजली, पानी व हवा के विरुद्ध शिकायत उचित है या अनुचित, तर्क सहित उत्तर दीजिए।
3. पाठ के आधार पर दोषी कौन है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. किस जगह की भूमि के आस–पास कोई भी जूते पहनकर नहीं जाते थे–

(क) राज दरबार (ख) जोहड़
(ग) बिजली घर (घ) विवाह–समारोह ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. यदि शिकायत सही नहीं हुई तो इन्हें ..... भी करना होगा।
2. मैं जिन लोगों के काम आता हूँ वह मेरी ..... नहीं करते।
3. लोगों को यही शिकायत है कि पानी अब ..... नहीं रहा।
4. मैं जहरीली होकर रोगों की ..... बन जाती हूँ।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

लिखिए, किसने किससे कहा–

1. 'लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्टी डाल देती हो।'
2. अपनी–अपनी आदतें बदलकर, अपने–अपने कर्तव्य पहचान कर, उसे पूरा कर, हम सभी को न्याय करना है।
3. यही कहा जा सकता है कि लोग अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वर्षा के कम होने के दो कारण लिखिए।
2. कूड़ा–करकट किन–किन को दूषित कर देता है और कैसे?
3. बिजली का उपयोग कहाँ–कहाँ किया जाता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'वायु प्रदूषण' पर लेख लिखिए।
2. बिजली बचाने के कई तरीके इस पाठ में आए हैं, उन्हें विस्तारपूर्वक लिखिए।

भाषा की बात

1. पाठ में 'खुद श्रीमान् बैंगन खाए, औरों को परहेज बताएँ।' कहावत आई है। ऐसी कहावतों को लोकोक्ति व जनश्रुति भी कहते हैं। ये मुहावरों की ही भाँति अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रस्तुत करती हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति का अर्थ है 'केवल दूसरों को सलाह देना, लेकिन उसे व्यवहार में न लाना।' आप भी अन्य लोकोक्तियाँ ढूँढ़कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. पाठ में 'मनोरंजन' शब्द आया है जिसका संधि विच्छेद, मनः+रंजन है। यहाँ विसर्ग (:) के बाद 'र' आने पर विसर्ग (:) का 'ओ' हो गया है।. यह विसर्ग संधि का उदाहरण है। अपने अध्यापक जी की मदद से निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए–

यशोगान	वयोवृद्ध	सरोज
मनोहर	पुरोहित	तपोबल

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में उचित विराम–चिह्न लगाइए–

अरे आप लोगों को लड़ने–झगड़ने के अलावा कोई काम नहीं है क्या दादी बोली अनुराग तो चुप रह गया राधिका बोली मनीषा कहती है इस जमाने में लड़ना बुरी बात है और आप ही ने तो एक दिन कहा था सत्य की रक्षा के लिए लड़ना हमारा धर्म है

4. पाठ के आधार पर निम्नलिखित को पात्र मानकर एक पृष्ठ में संवाद लिखिए–

(क) पैन और कॉपी

(ख) चॉक और ब्लेक बोर्ड

पाठ से आगे

1. इस एकांकी में आया है ''पानी का पानी उतर गया है'' पानी का पानी उतरने से क्या आशय है?
2. यदि पानी नहीं हो, तो हमारा जीवन कैसा होगा? लिखिए।
3. जिस समय बिजली का आविष्कार भी नहीं हुआ था, उस समय भी लोग रोशनी करते थे। उन साधनों की सूची बनाइए।

चर्चा कीजिए

1. हम बिजली व पानी को कैसे बचा सकते हैं?
2. वायु प्रदूषण व जल प्रदूषण को रोकने के उपायों पर चर्चा कीजिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

सिद्ध, विरुद्ध, चिह्न, मैँ, नहीँ

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''जो मनुष्य सामर्थ्य के अनुसार प्रकृति, पर्यावरण और जीव मात्र की सेवा में जीवन खर्च करता है, वही सार्थक जीवन का सृजन करता है।'